भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-5, अंक-7	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा-25.00
गुरुवार, 25 जुलाई' 81	मानद सहसम्पादक: डॉ. महेन्द्र दवे-श्री विमल दवे	प्रति अंक : 2.25

प्रगट ब्रह्म के हर डग, हर पद पुण्य प्रगट है ...

सत्संग समाज को ज्ञात है कि प्रगट ब्रह्मस्वरूप परम पूज्य काकाजी आजकल विदेश यात्रा पर है। भगवान श्री स्वामिनारायण की द्विशताब्दी यहीं भारत में अत्यन्त हर्षपूर्वक, उल्लासपूर्वक भव्य समारोहों के माध्यम से मनाई गई। उस समय योगी डिवाईन सोसाइटी के प्रमुख केन्द्र हरिधाम, सोखड़ा में अक्षरपुरुषोत्तम के एक भव्य मन्दिर का उद्घाटन हुआ। साथ-साथ मूर्ति प्रतिष्ठा, यज्ञादिक, दीक्षा समारोह, प्रवचनों और सरस एक सहजानंद ग्रंथ का प्रकाशन भी हुआ।

दिल्ली में द्वि दिवसीय कार्यक्रम में यज्ञानुष्ठान, सांस्कृतिक कार्यक्रम, परिचर्चा, एवं परम पूज्य काकाजी द्वरा लिखित 'पंचयज्ञ' पुस्तिका का प्रकाशन हुआ।

इन सब के माध्यम से पूर्ण पुरुषोत्तम श्रीजी महाराज भगवान स्वामिनारायण के पुण्य पवित्र कारी मोक्षधर्मी संदेश का अद्भुत प्रसार हुआ !

उसी संदर्भ में प.पू. काकाजी का विदेश प्रस्थान हुआ।

हम सब जानते हैं कि सन् 1952 की दिनांक 3 फरवरी को गुरुहिर श्री योगीजी महाराज ने प.पू. काकाजी को दिव्य स्वरूपानुभूति करवाई थी। उस दिन से आज तक प.पू. काकाजी के जीवन की प्रतिक्षण, योगीजी महाराज के असली स्वरूप का सब को ज्ञान हो, एक दिव्य विशाल गुणातीत समाज की स्थापना हो और उसके द्वारा व्यक्ति और समष्टि–दोनों का आत्यंतिक कल्याण हो इसके लिये, सतत गुजर रहा है। मान-अपमान, वृद्धि-हानि, जय-पराजय इनको छूते ही नहीं। एक ही संकल्प के लिये वे अपना पूरा खून दे रहे हैं।

प.पू. काकाजी को 3 फरवरी, 1952 के बाद किसी भी प्रकार का कर्तव्य शेष नहीं है। इनको व्रत, जप, तप, नियम, स्वाध्याय, यज्ञ आदि कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है। इनके द्वारा जो उपलब्धि होती है, उससे कई गुनी उपलब्धि काकाजी को हुई है। योगीजी महाराज की कृपा से उन्हें परमधाम–अक्षरधाम और वहाँ के अधिपति पूर्ण पुरुषोत्तम का प्रगट परिचय हो चुका है और दिव्य आनंद सतत उनके अस्तित्व में

रममाण है। प्रकृति और प्रकृति के पदार्थ के प्रति उनको किसी भी प्रकार का लगाव नहीं है। तो देश-विदेश सतत विचरण की प्रवृत्ति क्यों? प्रश्न स्वाभाविक है।

उत्तर है–इनकी यह प्रवृत्ति का उद्देश्य है–

1. संपर्क में आने वाले असंख्य नये मुमुक्षुओं को अक्षरपुरुषोत्तम के स्वरूप का परिचय करवाना और इसके माध्यम से उनका आत्यंतिक कल्याण करना।
2. सद्भावना वाले भक्तों के जीवन में रसबस होकर गुणातीत समाज का सम्यक दर्शन करवा कर इन्हें निष्ठा कराना।
3. निष्ठावान भक्तों को एकांतिकी भक्ति का सुझाव देकर इन्हें आत्मबुद्धि और प्रीति की दृढ़ता कराना और।
4. अंतेवासी सेवकों को अपने भव्य स्वरूप की सम्यक् पहचान करवानी।

उद्देश्य केवल भक्तियुक्त सेवा का है। अतः काकाजी की प्रत्येक यात्रा कल्याणयात्रा होती है।

10 जून के दिन प.पू. काकाजी ने भारत की भूमि छोड़ी और आज वे अमेरिका-लंडन की कल्याणयात्रा कर रहे हैं।

प.पू काकाजी के अनन्य अंतेवासी एवं इस कल्याणयात्रा के सहयात्री पू. महेन्द्रबापु लिखते हैंः

''रात को ढ़ाई बजे प.पू. काकाजी का प्लेन शिकागो पहुँचा। (पहुँचना था शाम साढ़े आठ बजे !) शिकागो के हरिभक्त इंतजार कर रहे थे। इनकी यह भक्ति देखकर करीब पूरी रात का जागरण और 50 घंटे की यात्रा की थकान होते हुए भी पू. काकाजी सुबह साढ़े छः बजे तक सबसे मिले....सब को आनन्द करवाया। सबको काका जी की आवश्यकता थी, सबको काकाजी का इतना महिमा था कि सब बैठे ही रहें। काकाजी ने पहुँचते ही सबको प्रेम से कहा, वाह !!! सबसे बड़ी है यह भीड़ा-भक्ति–अर्थात्, मेरी राह देखते हुए यह जो कष्ट उठाया उसका महत् फल मिलेगा...बाद में अनेक बातें हुई....सबकी स्मृति जागृत हुई। सबको परमानंद प्राप्त हुआ और....किसी ने एक क्षण भी आँख बंद नहीं की थी तब भी सुबह होते ही जैसे Fresh ही हो अपने अपने काम में लग गये।

पू. काकाजी तो स्वल्प विश्राम करके–फिर सेवा में लग गये। गुणातीतानंदस्वामी के अनुसार कथावार्ता में लग गये।....यहाँ श्री दिनकरभाई और कुसुम बहन ने मिलकर सरस वातावरण का निर्माण किया है।

श्री सुरेशभाई, रोहिणी बहन आदि सारी युवा मंडली में अत्यंत उत्साह है।

दिनांक 14 जून शिकागो के फ्रान्सिस्को हॉल में पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण का द्वि जन्मशताब्दी महोत्व बड़े पैमाने पर मनाया गया और दिनांक 21 को प.भ. दिनकर भाई के निवास स्थान पर मंदिर में महाराज की मूर्ति की प्रतिष्ठा भी की गई। महापूजा, अनुष्ठान, प्राण प्रतिष्ठा, वेदगान और मंत्र पुष्पांञ्जलि के बाद प.पू. काकाजी ने महाराज की मूर्ति समक्ष प्रार्थना कीः

''हे महाराज ! आपकी इस मूर्ति के समक्ष यदि कोई पाँच सत्पुरुषों की स्मृति सहित केवल पन्द्रह मिनिट प्रार्थना करें तो उसकी प्रार्थना निश्चित सुनना और आपकी प्रतीति निश्चित करवाना।''

इस समय वहाँ सर्वश्री सुरेशभाई, रोहिणी बहन, गोविन्दभाई अनसूया बहन, रमणभाई, हीराकाका, भोगीभाई, चीनुभाई, कनुभाई, नवीनभाई, मधु बहन, दिनकरभाई आदि सब उपस्थित थे। पू. काकाजी की प्रार्थना सुनकर सब भावविभोर हो गये और पू. काकाजी की यात्रा का

कल्याणकारी उद्देश्य की प्रतीति सबको हो गई ! श्री दिनकरभाई की सरलता और साधुता उभर कर सामने आई। भगवान, दिव्य संत, भक्त यह त्रिमूर्ति के दर्शन से सब धन्य हो गये। श्री कीर्तिभाई ने समग्र समारोह की वीडीओ फिल्म ली है।

पू. काकाजी की लीला अलौकिक है। इन्होंने सबके घर से एक-एक खाद्य पदार्थ मंगाकर एक सुंदर Buffet पार्टी की योजना की थीः

भक्तिरस और षड्रस का सुयोग हुआ। सब प्रसन्न हो गये।

प.पू. काकाजी तो सतत धून्य, कथावार्ता में लीन होकर एक वातावरण जमा रहे है, सहृदयता का निर्माण कर रहे हैं, अक्षरपुरुषोत्तम की स्थापना मानव मंदिर में कर रहे हैं। कर्ता होते हुए भी अकर्ता है। महाराज जिस प्रकार बड़े आयोजन के बाद शीघ्र स्थानत्याग करते थे इस प्रकार काकाजी ने 21 जून के समारोह के बाद शीघ्र विचरण प्रारंभ कर दिया। किन्तु प्रयाण के पूर्व इन्होंने न केवल शिकागोवासी हरिभक्तों को किन्तु सारी मानवजाति को संदेश दियाः

(1) गुरुहरि प.पू. स्वामीबापा ने मुफ्त में आशीर्वाद दिया है, आप क्यों इसको स्वीकार नहीं करते हो?

(2) आज से निश्चय कीजिए कि अब हमारी सारी प्रवृत्ति, हमारे सारे संकल्प, हमारे सारे भाव और हमारी सारी क्रिया उनकी (श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की) ओर दृष्टि रख कर होंगे।

(3) सिद्धि तो घर में ही बैठी है, किन्तु इस सिद्धि का हम उपयोग नहीं कर सकते हैं। कारण क्या है? या तो हम गाफिल हैं या हमारा अहंकार दिवार बन कर बैठा है। अतः सुबह-शाम स्वरूपयोग करना। रात में प्रायश्चित रूप प्रार्थना करना। किसी के आचरण की ओर दृष्टि न कीजिए। साथी भक्तों के आचरण भी न देखिये। प.पू. स्वामीबापा का अपरंपार महिमा ही देखना है। उनके साथ सम्बन्ध जोड़ना है।

(4) दिन में तीन बार नौकारमंत्र स्मृति में लाईए, और बोलिए। इसका ही व्यसन कीजिए।

(5) आप की सर्व क्रिया पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण और संत की स्मृति सहित कीजिए। निश्चित आपको निर्विकल्प समाधि में जैसी शान्ति प्राप्त होती है वैसी शान्ति प्राप्त होगी, दिव्यदृष्टि प्राप्त होगी। अचल मति से इतनी बातों का प्रतिज्ञापूर्वक पालन कीजिए।

दिनकर भाई के यहाँ महाराज की भव्य मूर्ति की प्रतिष्ठा करने के बाद पूज्य काकाजी, महाराज के पूर्व सम्बन्ध युक्त केवल दो चार भक्तों की प्रगति हो और वे आत्यंतिक सुख प्राप्त कर सकें इस हेतु 900 मिल की यात्रा करके फ्लोरिडा गये....! New orleans में श्री जितुभाई असाधारण निष्ठायुक्त भक्त है। यहाँ सबको महापूजा, सेवा और समागम का लाभ प्राप्त करवाया। Huston (Texas) में जयंती भाई और वर्षा बहन हैं। यहाँ प्रमुख सत्संगी हैं श्री सुरेशभाई। उन सबको दर्शन, भक्ति का लाभ दिया।

Los Angels में डॉ. प्रवीणभाई, हसमुखभाई भाई, आनंदी बहन, शरदभाई आदि हैं।

सानफ्रान्सिस्को में पू. रमेशभाई पटेल, अरविंदभाई, निर्मला बहन आदि है।

इन सब स्थानों में इन सब सत्संगियों के आग्रह से सुंदर सभाओं के आयोजन हुए। इनमें अन्यान्य सम्प्रदायों के मुमुक्षुओं ने भी आकर पू. काकाजी की अमृतवाणी का आनंद लिया।

इन सुंदर आयोजनों के लिये प्रत्येक स्थल के

आयोजक अत्यन्त धन्यवाद के पात्र हैं। Los Angeles से 200 मील दूर Sanziego करके स्थल है। प.पू. काकाजी आए हैं यह सुनकर वहाँ के खिस्ती पादरी Mr. Frank Etono ने 200 मील की यात्रा की और पूरे दिन काकाजी के समागम में रहे। वे इतने प्रभावित हो गये थे कि विदाय लेते समय गद्-गद् हो गये। एक सन्त ने सन्त को पहचान लिया था !

Toronto में भी ऐसी ही घटना हुई। यहाँ प.भ. चन्द्रकांतभाई के घर पे International kundalini Research Institute के चेयरमैन Mr. Joseph Dippong पू. काकाजी के संपर्क में प्रथम बार आये और वे भी अत्यन्त प्रभावित हो गये।

Nebraska Hastings में सद्गुरु मुक्तानंद बाबा की शिष्या उषा बहन कापड़िया है और प.भ. श्री रमेशभाई पंचाल और गीता बहन भी है ! Baltimore में भूपेन्द्रभाई असली सत्य शोधक है। इन सबको किसी भी प्रकार के पूर्व ग्रह रहित हो कर आत्मीयता पूर्वक काकाजी ने सुंदर मार्गदर्शन करवाया। सबको परम संतोष का अनुभव हुआ और लगा कि हमारे साधना पथ में जो क्षति थी उसकी पूर्ति प.पू. काकाजी के सहवास, सान्निध्य और समागम से हो गई।

Washington में हमारे कोई सत्संगी है ही नहीं, किन्तु वहाँ गुजराती समाज के सब मुमुक्षुगण इकट्ठे हो गये और सबको परम आत्मीयता का अनुभव हुआ।

इस प्रकार प.पू. काकाजी की कल्याणयात्रा निरंतर आगे बढ़ रही है। सबको समय स्वल्प लग रहा है ! सब कहते है इतना नहीं, पूरा एक सप्ताह हमें दे दीजिए। प.पू. काकाजी अमेरिका के भिन्न-भिन्न प्रदेशों की शीघ्र यात्रा कर रहे हैं। जितना भी समय दे सके इतना दे रहे हैं। प्रतिदिन 16 से 18 घंटा अविरत श्रम करते हैं और स्वामिनारायण का जयघोष कर रहे है–करवा रहे हैं।

नित्य भजन, नित्य, धून्य, नित्य कथा चलते रहते हैं। काकाजी एक ही बात सोचते हैं और सेवकों को एक ही बात कहते हैं :

- सर्वदेशीय दृष्ठि से सबकी साथ हिल मिल जाईए।
- किसी भी प्रकार की अपेक्षा और उपेक्षा रहित हो कर नित्य महाराज का महिमा गान कीजिए।

प.पू. काकाजी ने अमेरिका की धरती पर एक संकल्प घोषित किया है कि अनादि मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी की 200वीं जन्मजयंती पक्षापक्षी से रहित होकर, सबको साथ लेकर भव्यता से मनानी है। यह सुनकर लगता है कि तब तक तो स्वामिश्री की इच्छानुसार संसार का पत्ता-पत्ता 'स्वामिनारायण–स्वामिनारायण' करने लगेगा; क्योंकि अमेरिका में भी प्रति स्थान में प्रीति बढ़ रही है, निष्ठायुक्त लोग आगे आ रहे हैं। और प.पू. काकाजी को कह रहे है कि जैसा आप कहेंगे वैसा करने के लिये हम तत्पर हैं। चुंबक लोहे को आकर्षित करता है इसी प्रकार अमेरिका में प्रतिदिन नये नये मुमुक्षु पू. काकाजी के पास खींचे आ रहे हैं, कृतार्थता अनुभूत कर रहे है। काकाजी सबको सुनते है; सबके व्यवहार में मिल जाते हैं; सूचना देते हैं, आशीर्वाद देते हैं, आत्मा की प्रीति दृढ़ करवा रहे हैं और पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान स्वामिनारायण में तल्लीन कर देते हैं।

☆ ☆ ☆

रक्षाबंधन

राखी का त्योहार आ रहा है। रक्षा की भावना का कितना भव्य त्योहार !

हम जानते हैं कि सांसारिक अन्य संबंधों में एक बहन और भाई का संबंध ही पवित्र और मानसिक मूल्यांकनों से परे का निरपेक्ष संबंध है। तो रक्षा पाने के लिये ऐसा पवित्र और निरपेक्ष संबंध का होना जरूरी है यह राखी के पर्व का हमें संदेश है।

इसी महामंगलकारी पर्व की सार्थकता के लिए महाप्रभु श्री स्वामिनारायण-सर्वावतारी श्री सहजानंदस्वामी पृथ्वी पर पधारे....अपनी ज्योति भगवत्स्वरूप विभूतियों द्वारा अखंड रखी और इन विभूतियों के माध्यम से अपने आश्रितों की सारी जिम्मादारी अपने सर ले ली...शाश्वत् रक्षा का अभयदान दे दिया !

और रक्षा पाने की चाबी (कुंजी) देने की भावना से स्वयं ही वचनामृत जेतलपुर प्रकरण के 5 में प्रश्न पूछा कि–'हमारी इच्छा के मुजब ही सब कुछ होता है, फिर भी सत्संगी को सुख-दुख होता है, रोगादि प्राप्त होता है तथा उस की धनसमृद्धि की कुछ हानि होती है और कोई तो मेहनत कर कर के मर जाता है तो भी दरिद्री जैसा ही रहता है–ऐसा क्यों?

फिर महाराज ने ही उत्तर दिया कि इसका कारण यह है कि भगवान का भजन करने में उसे जितनी कसर रह जाती है। उतनी उसमें बरकत नहीं हो पाती।

यह कसर क्या? तो–महाराज का कहना है कि हमारी पवित्रता पर हमारी रक्षा निर्भर है। पवित्रता का मतलब है–

1. भगवान स्वामिनारायण ने दिये हुए पंचवर्तमान युक्त हमारा जीवन हो तो–

1. शराब नहीं पीनी,
2. मॉंस नहीं खाना,
3. चोरी नहीं, करना
4. व्यभिचार (परस्त्रीगमन) नहीं करना और
5. वर्णांतर–जात्यंतर नहीं करना–नहीं करवाना–

इन पंचवर्तमानों का पालन करके पवित्रता हम गवायें नहीं। और

2. भगवान और संत के अलावा कोई भी व्यक्ति, पदार्थ, प्रसंग या शक्ति–ग्रह, ज्योतिष, पनोती, काल, कर्म, मायादि का हम पर प्रभाव पड़े ही नहीं–यह है सच्ची पवित्रता ! जब हमें सर्वोपरि प्रभु मीले हैं तो हम इनमें अनन्यभाव रखने के बजाय–

1. इधरउधर और कहीं क्यों देखें?
2. और कोई शक्ति से क्यों गभराये?
3. अन्यों से क्यों रक्षा चाहे।
4. अन्य उपायों (जंतर-मंतर, जादू-टोने, डोरा, धागादि) लेने को क्यों इच्छे?

ये तो बातें यदि हम में होगी तो प्रभु से रक्षा मॉंगनी नहीं पड़ेगी, वे हमारी रक्षा करने बंधे हुए ही है। यह है रक्षा पाने की चाबी !

महाराज ने इसी वचनामृत में बिना हिचके स्पष्ट कह दिया है–'.....आप हम में दृढ़ विश्वास रखोगे और हम कहे वैसे करोगे तो यदि आप पर कोई भारी कष्ट आ पड़े, या सात अकाल जैसे आपत्ति आ पड़े तो उससे हम आपकी रक्षा करेंगे और उबरने का कोई भी उपाय न सूझता हो ऐसा कष्ट आया हो तब भी हम आपकी रक्षा करेंगे, बशर्ते आप हमारे सत्संग के नियमों का ठीक पालन करते होंगे और सत्संग के नियमों का ठीक पालन करते होंगे और सत्संग रखोगे। वरन् (प्रारब्धवश) जो महादुःख को पाओगे उससे हमें कुछ लेना-देना नहीं है।'

तो, अब भगवत्स्वरूप संत से ऐसा परमपवित्र संबंध दृढ़ करके हम सर्वदा-सर्वथा सुरक्षित होकर सुखी रहें यही इस राखी के महामंगलकारी पर्व पर प्रार्थना करें।

☆ ☆ ☆

Rakshabandhan (Shravani Purnima)

The day of the full moon of the bright half of Shravan, known as Shravani Purnima has special significance in the cultural heritage of India. This day hearlds the sanctity and purity of the brother sister relationship Which is above the mental calculation or material consideration.

Security, like fear and sex is one of the fundamental insticts of life and this auspicious day is odserved for praying for the security of life. Therefore it is also known as Rakshabandhan day. However, enlightened and awakened souls like Prahlad prayed not for the security of the mundane life but wished for the continuence of the grace of god in the maintainance of the unique spiritual relationship of love intimacy with the master or gurudev which is the very backbone of the spiritual advancement of the true sadhaka. This sould ultimately result into permanent, affectionate communion with the God. However, such an advanced state can be reached only by those sincere devotees or bhaktas who offer sincere and unconditional surrender to god alone or to God ordained realised saint. We have brilliant examples of such relationship between Lord Krishna & Arjuna, Shukdevji and Parikshit, Ram & Hanuman etc. This Principle has been most authentically advocated by Lord Krishna in Bhagvad Gita-

He tells Arjuna, "Leave all your moral considerations, mental, physical and social codes of conducts and have unconditional surrender to me and me alone, then I will deliver and relieve you from all you sins."

Apart from this He also promised-

'न मे भक्तः प्रणश्यति'।

'My devotee shall not perish' and

'स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्'।

that a little obeyance of this Dharma will relieve you from the greatest fear.

In this novel way Lord Krishna liberated His bhaktas and made them fearless and happy. The same message was also given by Jesus Christ. Lord Swaminarayan also bestowed special favours to His real devotees by His infinite love, grace and compassion which has been ably reflected in vachanamrit Gadhada Sec. I, 72 and Jetalpur, 5 as under-

If the bhaktas realise the magnanimity of the supremacy of God's power and accept wholeheartedly saints and fellow satsangees as their intimate relatives, then by sheer grace of God or Gurudeo, they would also become immune to time space, causation, illusion or prakriti i.e. crude nature'. (Gadhda Sec. 1, 72)

'If you have faith in me, you will atain my Divine Abode. If you all have reposed such supreme trust in my words and would behave accordingly. I will retrieve you even from the worst miseries be they of type of worst of famines or any other irrevocable entanglement (Jetalpur, 5)

He thus granted full protection and security of life and liberation from hostile forces not after death but here and now in this very life. He went further ahead than other Avatars by allowing us to cherish our happiness and joys and took upon Himself all our difficulties, worries, pains and misseries. Before He took charge of the head of the sect. He prayed to His Guru

Ramanand Swami-

'O Lord, Let the sufferings of your devotees fall upon me. Let me bear the agony of hundreds of stings but your devotee shall not get a single one. If fate of your devotee give him a begging-bowl let me have that bowl, but your devotee shall never grieve for food and cloth. Sahajananda Swami Himself was Purna-Purushottam, still He asked to bear agonies and sufferings of His devotees! How eager He was to take all the grievences of His devotees upon Himself! This was His love and compassion.

One can remeber of His boons which have remained uparallel and most outstanding in the spritual histroy of the world. Granting the continuance of His unique spiritual heirarchy He even extended to give darshan or vision at the last moment on the point of death to deliver and liberate the soul and take to His eternal abode Akshardham. thus protecting from the fear or endless cycle of birth and death. What is still more remarkable is that it is not the Master alone who is thus seen in the form of the divine vision, but number of times He comes with His principal disciples in the company of Sadhus and the continuity of the same process is also guranteed even now and for ever.

At present by the grace of H.D. Yogijee Maharaj this heirarchy is maintained through the Divine personalities like P.P. Kakaji. P.P. Pappaji and P.P. Hariprasad Swamiji. We are most fortunate to have complete protection and total security in all ways and in all manners through such Divine Master in this accidental and illussive age i.e. Kaliyuga.

On this holy and auspicious day of Rakshabandhan let us resolve to pray sincerely and honestly to God and to our Gurudev so that He may shower His blessings for the dynamic and creative life and for sharing same sort of pure love and true friendship with all colleagues and fellow sadhakas in particular and the entire humanity in general.

-Hemant Merchant

What is a Friend?

What is a friend?I will tell you. It is a person with whom you dare to be yourself. Your soul can be naked with him. He seems to ask of you to put on nothing, only to be what you are. He does not want you to be better or worse. When you are with him, you feel as a prisoner feels who has been declared innocent. You do not have to be on your guards. You can say what you think so long as it is genuinely you. He understands those contradictions in your nature that lead others to misjudge. With him you breath freely. Your meannesses and absurdities and in opening them up to him, they are lost, dissolved on the white ocean of his loyalty. He understands you do not have to be careful. You can abuse him, neglect him tolerate him. Best of all, you can keep still with him. It makes no matter. He likes you. He is like fire that purges to the bone. He understands. He understands, You can weep with him, sing with him, laugh with him pray with him, through it all and underneath-he sees knows and loves you. A friend? What is a friend? Just one. I repeat, with whom you dare to be yourself.

Franklene Beran

योगीगीता.....

मूल्य: 2-00 रुपये

वर्षों पूर्व शुक्रवार दि. 28-3-41 के दिन गुरुहरि स्वामिश्री योगीजी महाराज ने एक पत्र लिखा था। उद्देश्य यह था कि जीव मोक्ष कैसे पाये और ब्रह्मस्वरूप कैसे हो सकता है यह श्रेयार्थी साधकों को स्पष्ट करना। हम अपने जीवन में यदि एक नया मोड़ लाना चाहते हैं, शांति पाना चाहते हैं, अपना जीवभाव छोड़ कर ब्रह्मभाव की ओर गति करना चाहते हैं तो हमारे आचरण में क्या परिवर्तन लाना चाहिये इस बात का पूरा विवरण योगीजी महाराज ने इस सप्तपदी-सात डग सात सोपान-सात वार्ता द्वारा स्पष्ट किया है।

इस चातुर्मास दौरान भगवत्स्वरूप संतो की स्मृति सहित इस पत्र का नित्य पाठ करने प.पू. प्रगट ब्रह्मस्वरूप काकाजी ने आज्ञा दी है। हिन्दी भाषी हरिभक्त भी यह पाठ नित्य कर सकें इस हेतु **'योगीगीता'** पुस्तिका द्वारा इस पत्र का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हुआ है। ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की वाणी ही अक्षरशः यहाँ अद्वधृत है, हम इसका नित्य पाठ करेंगे और जीवन में उतारेंगे.....

योगीगीता–प्राप्तिस्थान :

(1) योगी डिवाईन सोसाईटी
ए-103, अशोकविहार-3
दिल्ली-110052

(2) योगी डिवाईन सोसाईटी
6-डी, सोनावाला बिल्डींग्स
ताड़देव, बम्बई-400007

(3) योगी डिवाईन सोसाईटी
हरिधाम, सोखड़ा (वायाः छानी)
ता. जि. बड़ौदा, पीन : 391 745

व्रतोत्सवसूची

1.	दि. 15.8.81	शनिवार	रक्षाबंधन पर्व
2.	दि. 23.8.81	रविवार	श्री कृष्णजन्माष्टमी

Published by Sadhu Mukundjivandas for Yogi Divine Society
A-103, Ashokvihar-III, Delhi110052, India. Tel.: 718838
Prined at Thakkar Printing Press, 2588, Basti Punjabian, Subzi Mandi, Delhi 110 007 Phone: 524058